डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता , सत्र 13, यौन नीति

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 13 है, यौन नैतिकता।

ठीक है, तो चलिए अब अपना ध्यान यौन नैतिकता की ओर मोड़ते हैं, और यहाँ कई प्रश्न हैं जिनका हम उत्तर देंगे, जिनमें ये शामिल हैं: हमारे यौन आचरण के संबंध में हमारे क्या दायित्व हैं, सेक्स के बारे में सोचते समय हमें किन दार्शनिक और धार्मिक मूल्यों का मार्गदर्शन करना चाहिए, और कब, यदि कभी, समलैंगिक संबंध नैतिक रूप से स्वीकार्य हैं।

अब, आइए हम इस बात पर चर्चा शुरू करें कि आम तौर पर यौनिकता पर आधुनिक अनुमोदक दृष्टिकोण क्या माना जाता है और 20वीं सदी में रहने वाले ब्रिटिश दार्शनिक बर्टेंड रसेल के कुछ विचार क्या हैं। उन्होंने 1930 के दशक में एक निबंध लिखा था जिसमें उन्होंने एक नई यौन नैतिकता का प्रस्ताव रखा था। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि उनके विचार उस समय बहुत क्रांतिकारी थे।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, यह ध्यान रखना उपयोगी है कि बर्टेंड रसेल ने अपने समय के अन्य दार्शनिकों के साथ मिलकर यौनिकता और यौन आचरण के बारे में पश्चिम में विचारों के विकास को कैसे प्रभावित किया। इसलिए, रसेल जिन चीजों का समर्थन करते हैं उनमें से एक है विवाह पूर्व यौन संबंध। उनका कहना है कि यह असंभव है कि बिना किसी पूर्व यौन अनुभव के कोई व्यक्ति केवल शारीरिक आकर्षण और विवाह को सफल बनाने के लिए आवश्यक अनुकूलता के बीच अंतर कर पाएगा।

इसलिए, वे विवाह-पूर्व सेक्स के पक्ष में हैं। वे आसान तलाक के भी समर्थक थे, जो कि बहुत मुश्किल था और, आप जानते हैं, 1930 के दशक में नो-फॉल्ट कानून वगैरह से पहले इसे हासिल करना बहुत मुश्किल था। उनका मानना था कि तलाक केवल जोड़े की आपसी सहमति से ही संभव होना चाहिए।

उन्होंने पारंपरिक ईसाई यौन नैतिकता को समस्याग्रस्त और वास्तव में विनम्रता और ईर्ष्या का परिणाम माना। उन्होंने इस विशेष निबंध का समापन यह कहते हुए किया कि, जैसा कि उन्होंने कहा, यह अच्छा होगा यदि पुरुष और महिलाएं यौन संबंधों में सहिष्णुता, दयालुता, सच्चाई और न्याय के सामान्य गुणों का अभ्यास करना याद रखें। इसलिए, मुझे लगता है कि वह यौन नैतिकता के लिए एक तरह का सद्गुणी, नैतिक दृष्टिकोण पेश कर रहे हैं।

लेकिन यह देखना दिलचस्प है कि कुछ महत्वपूर्ण गुण हैं जो उनकी सूची में नहीं हैं, कम से कम ईसाई तो यही मानते हैं कि यौन आचरण के क्षेत्र में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए ये गुण बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं कहूंगा, खास तौर पर, पवित्रता और वफ़ादारी। कोई? ऐसा लगता है कि ये

महत्वपूर्ण गुण हैं जिन्हें हमें यौन नैतिकता के बारे में सोचते समय ध्यान में रखना चाहिए और उन्हें महत्वपूर्ण मानना चाहिए।

निश्चित रूप से, धर्मग्रंथ यौन शुद्धता और निष्ठा पर बहुत अधिक जोर देते हैं; दस आज्ञाओं में से एक इस पर ध्यान केंद्रित करती है। एक अन्य अभिविन्यास, जो पारंपरिक ईसाई यौन नैतिकता के अनुरूप होगा, जिसे थॉमस मैप्स नामक व्यक्ति द्वारा आगे बढ़ाया गया या उसका बचाव किया गया, वह अपने दृष्टिकोण में कांटियन है। यह व्यक्ति, थॉमस मैप्स, कांटियन नैतिकता के कुछ पहलुओं को यौन नैतिकता पर लागू करता है और विशेष रूप से कांट के स्पष्ट अनिवार्यता के दूसरे संस्करण को लागू करता है, जो कहता है कि हमें लोगों के साथ केवल साधन के रूप में व्यवहार नहीं करना चाहिए।

हम कांट की नैतिकता से इसे याद करते हैं। लोगों के साथ हमेशा साध्य के रूप में व्यवहार करें और कभी भी केवल साधन के रूप में नहीं। इसलिए मैप्स पूछते हैं, इसका क्या मतलब है कि हम लोगों के साथ यौन व्यवहार कैसे करते हैं? किसी व्यक्ति का यौन उपयोग करने का क्या मतलब है? इसलिए, वह कहते हैं कि किसी व्यक्ति का यौन उपयोग करने का क्या मतलब है, यह समझने की कुंजी स्वैच्छिक सूचित सहमति की अवधारणा है।

जब आप किसी व्यक्ति का यौन शोषण करते हैं, तो उसे एक साधन के रूप में इस्तेमाल करें, यानी उसकी स्वैच्छिक सूचित सहमति का उल्लंघन करें। उन्होंने कुछ ऐसे तरीकों पर भी ध्यान दिया है जिनसे इसे कमजोर किया जा सकता है। दो तरीके हैं जिनसे किसी व्यक्ति की स्वैच्छिक सूचित सहमति छीनी जा सकती है, या तो जबरदस्ती या धोखे से।

अगर किसी व्यक्ति को मजबूर किया जाता है, तो यह उसकी स्वैच्छिकता को खत्म कर देता है। अगर उसे धोखा दिया जाता है, तो यह उसकी मुखबिरी-पहचान को खत्म कर देता है। तो, जबरदस्ती और धोखा।

मैप्स का कहना है कि किसी बच्चे या मानसिक रूप से विकलांग वयस्क के साथ यौन संबंध बनाना अनिवार्य रूप से किसी अन्य व्यक्ति का उपयोग करने का मामला है क्योंकि वे अपनी सूचित सहमति नहीं दे सकते। यहां उनका कहना NAMBLA की भी निंदा करता है, जो कि उत्तरी अमेरिकी पुरुष-लड़का प्रेम संघ है, जो सहमति की आयु संबंधी कानूनों को खत्म करने के बारे में है। दिलचस्प बात यह है कि रसेल की नैतिकता अनिवार्य रूप से इसकी निंदा नहीं करती है।

इसलिए, झूठ बोलकर या ऐसी जानकारी छिपाकर जानबूझकर धोखा देना जिससे किसी व्यक्ति की सहमति सेक्स के लिए हो, किसी का इस्तेमाल करने का मामला है और इसलिए, अनैतिक है। बेशक, ऐसे कई मामले हैं जहाँ लोग झूठ बोलते हैं, जैसे कि वे बताते हैं, एक आदमी एक महिला को बताता है कि वह सिंगल है, वह शादीशुदा नहीं है, या वह ऐसी जानकारी छिपाता है जो बताती है कि वह एचआईवी पॉजिटिव है। इससे उस व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाने की उसकी संभावना बढ़ जाती है।

लेकिन यह जानबूझकर किया गया धोखा है, और इसलिए यह सूचित सहमति का उल्लंघन करता है। तो, इस तरह के धोखे किस तरह के हो सकते हैं? मैंने अभी जो उल्लेख किया है,

उसके अलावा, हम ऐसे अन्य उदाहरणों के बारे में भी सोच सकते हैं जहाँ कोई व्यक्ति झूठ बोलता है, धोखा देता है, या जो भी करता है। ऐसे कई अलग-अलग तरीके हैं जिनसे कोई व्यक्ति धोखा दे सकता है, और फिर ऐसे भी अलग-अलग तरीके हैं जिनसे कोई व्यक्ति जबरदस्ती कर सकता है।

बेशक, इसका एक आदर्श उदाहरण जबरन बलात्कार है, और वह शारीरिक जबरदस्ती है। लेकिन यौन जबरदस्ती के अन्य रूप भी हो सकते हैं, और MAPES दो तरह की यौन जबरदस्ती में अंतर करता है। कभी-कभी होने वाली जबरदस्ती में प्रत्यक्ष बल का इस्तेमाल होता है, लेकिन स्वभावगत जबरदस्ती भी होती है, जिसमें व्यक्ति प्रत्यक्ष बल का इस्तेमाल नहीं करता, बल्कि किसी को यौन संबंध बनाने के लिए नुकसान पहुंचाने की धमकी देता है।

इस स्वभावगत प्रकार के दबाव को स्पष्ट करते हुए, MAPES धमकी और प्रस्ताव के बीच अंतर करता है। धमकी एक ऐसी स्थिति है जहाँ अनुपालन न करने पर अवांछनीय परिणाम सामने आते हैं। प्रस्ताव वह है जहाँ अनुपालन करने पर वांछनीय परिणाम, जैसे कि प्रलोभन, मिलता है।

वह एक प्रोफेसर का उदाहरण देते हैं, जो एक मामले में एक महिला छात्रा को धमकी दे सकता है कि, तुम जानती हो, अगर तुम मेरे साथ सेक्स नहीं करोगी, तो तुम्हारा ग्रेड खराब हो जाएगा। यह एक धमकी है। यह एक अवांछनीय परिणाम है जिसका उपयोग छात्रा को मजबूर करने के लिए किया जाता है।

या, और यह शायद इस तरह के संदर्भों में अधिक आम है, एक प्रस्ताव दिया जा सकता है। आप जानते हैं, अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको ए ग्रेड मिल सकता है। यह सेक्स के लिए एक प्रलोभन है।

यह अभी भी एक तरह का स्वभावगत दबाव है। प्रस्ताव में भी एक निहित धमकी हो सकती है। तो, ये अलग-अलग तरीके हैं जिनसे दबाव, स्वभावगत दबाव, हो सकता है।

ठीक है, अब हम रोजर स्कूटन के कुछ विचारों पर आते हैं, जो कामुकता के लिए अरस्तू के सद्गुण नैतिकता को लागू करते हैं। और वह एक पारंपरिक ईसाई दृष्टिकोण का बचाव करते हैं कि सेक्स केवल एकल विवाह में ही उचित है। इसलिए, स्कूटन एक यौन नैतिकता का समर्थन करते हैं जो मूल रूप से एक ईसाई यौन नैतिकता होगी।

उन्होंने कहा कि कामुक प्रेम एक प्रकार का गुण है जो मानव कल्याण या खुशी में योगदान देता है। आपके जीवन में कामुक प्रेम होना ज़रूरी नहीं है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जो हममें से अधिकांश लोग चाहते हैं। और यह निश्चित रूप से किसी व्यक्ति की समग्र खुशी को बढ़ा सकता है और बढ़ाता भी है।

लेकिन किसी व्यक्ति को सद्गुणी, कामुक प्रेम का अनुभव करने के लिए, इसे एकनिष्ठ रूप से अभ्यास करने की आवश्यकता होती है। और स्कूटन कहते हैं कि ऐसा दो कारणों से होता है। सबसे पहले, चूँकि कामुक प्रेम मिलन के बारे में है, इसलिए यह ईर्ष्या से ग्रस्त है।

इसलिए, प्रेम के एक सद्गुणी जीवन में इसे खत्म करना होगा। एक चीज जो इसमें योगदान दे सकती है वह है प्रतिज्ञा, प्रतिबद्धता की एक गंभीर प्रतिज्ञा, जो निश्चित रूप से एक विवाह समारोह में होती है। उन्होंने यह भी कहा कि यौन अभिव्यक्ति जो वैवाहिक प्रतिबद्धता के भीतर विवश नहीं है, वह व्यक्ति के संपूर्ण आत्म की अभिव्यक्ति के रूप में अपनी उचित भूमिका के विपरीत है।

इसलिए, उन्होंने कहा कि जहां प्रतिबद्धता के बिना यौन जुनून की आदत है, प्रतिबद्धता का प्रवेश जुनून को खत्म कर देगा। मैंने एक बार एक बम्पर स्टिकर देखा था जिसमें लिखा था, क्या शादी के बाद सेक्स होता है? यह सवाल के समानांतर है, क्या मृत्यु के बाद जीवन है? लेकिन वह बम्पर स्टिकर किसी ऐसे व्यक्ति के दृष्टिकोण से आ रहा है जो मानता है कि किसी तरह वैवाहिक प्रतिबद्धता कामुक जुनून को नष्ट कर देती है। और सबसे अच्छी तरह का यौन जीवन वह है जहाँ आप वैवाहिक प्रतिबद्धता से विवश नहीं होते।

स्कूटन के अनुसार, यह सच से बिलकुल उलट है, वास्तव में कामुक प्रेम और जोशीले यौन जीवन के लिए सबसे अच्छी जगह वैवाहिक संदर्भ में ही होती है। और यह निश्चित रूप से ईर्ष्या से बचने से सबसे स्वस्थ है, ईर्ष्या की समस्या, स्कूटन का तर्क है, प्रतिबद्धता की शपथ के माध्यम से। लेकिन ऐसे कई अन्य कारण हैं कि क्यों विवाह के भीतर ही सेक्स सबसे अच्छा है।

उन्होंने कहा कि अनुभवजन्य तथ्य इसकी पुष्टि करते हैं। चूंकि एकल विवाह वाले जोड़े यौन रूप से अधिक संतुष्ट होते हैं, सर्वेक्षणों से पता चलता है कि यह निश्चित रूप से सच है। दरअसल, मैंने जो अध्ययन देखा था, जो कुछ साल पहले काफी व्यापक रूप से प्रचारित हुआ था, उसने पुष्टि की थी कि रूढ़िवादी ईसाई महिलाएं सबसे अधिक संभोग सुख प्राप्त करती हैं।

और यह कुछ ऐसा है जिसकी हमारी लोकप्रिय संस्कृति और निश्चित रूप से हॉलीवुड द्वारा अपेक्षा नहीं की जाएगी, जो किसी भी तरह की वैवाहिक प्रतिबद्धता के बाहर मुक्त प्रेम और मुक्त सेक्स का जश्न मनाता है। इसके अलावा, उन जोड़ों के लिए तलाक की दर अधिक है जो शादी से पहले साथ रहते हैं। तो फिर, यह पूरी तरह से बर्टेंड रसेल के विचार का खंडन करता है कि, ठीक है, अगर आप शादी से पहले एक साथ रहते हैं तो आप एक सफल विवाह की संभावनाओं को बेहतर बनाने जा रहे हैं।

नहीं, इसका उल्टा सच है। वास्तव में, अगर आप शादी से पहले साथ नहीं रहते हैं तो आपके लिए बेहतर संभावनाएँ हैं। सहवास पर कुछ दिलचस्प उद्धरण यहाँ दिए गए हैं।

यह लेख दो लेखकों, वेट और गैलाघर का है। यह मैगी गैलाघर हैं, जिन्होंने कामुकता पर बहुत सारे लेख लिखे और प्रकाशित किए हैं। वे कहते हैं कि, औसतन, विवाह में सहवास करने वाले जोड़े यौन रूप से कम वफादार होते हैं, कम व्यवस्थित जीवन जीते हैं, बच्चे पैदा करने की संभावना कम होती है, हिंसक होने की संभावना अधिक होती है, कम पैसा कमाते हैं, और विवाहित जोड़ों की तुलना में कम खुश और कम प्रतिबद्ध होते हैं।

और यहाँ सी.एस. लुईस का एक उद्धरण है, जो कहते हैं कि विवाह के बाहर यौन संबंध की भयावहता यह है कि जो लोग इसमें लिप्त होते हैं, वे एक तरह के मिलन, यौन मिलन को अन्य

सभी तरह के मिलन से अलग करने की कोशिश कर रहे हैं, जो इसके साथ चलने और संपूर्ण मिलन बनाने के लिए अभिप्रेत थे। इसलिए, मुझे लगता है कि ये कुछ दिलचस्प और महत्वपूर्ण अवलोकन हैं। तो, आइए एक विवाह के लिए बाइबिल के कुछ आधारों के बारे में बात करते हैं।

यह बाइबिल का दृष्टिकोण है कि यह एक पुरुष और एक महिला होनी चाहिए जो एक दूसरे से जुड़कर विवाह में एक दूसरे को दी जानी चाहिए। शास्त्र में जिस रूपक का उपयोग किया गया है, और यह वास्तव में एक रूपक से अधिक प्रतीत होता है, वह एक शरीर का यह वाक्यांश है। जैसा कि उत्पत्ति के लेखक कहते हैं कि प्रभु ने एक महिला, हव्वा को उस पसली से बनाया जो उसने आदम नामक पुरुष से निकाली थी, और वह उसे आदमी के पास ले आया।

यही कारण है कि एक आदमी अपने पिता और माँ को छोड़ देता है, और वह अपनी पत्नी से जुड़ जाता है, और वे एक शरीर बन जाते हैं। जैसा कि आदम ने कहा, मेरे मांस का मांस, मेरी हड्डी की हड्डी। यही दो मानव लिंगों की उत्पत्ति है, जिसे यीशु ने मत्ती 19 में तलाक के बारे में पूछते समय वापस सुना, यह कहते हुए कि परमेश्वर ने एक साथ जोड़ा है, किसी को अलग न होने दें।

व्यभिचार न करने की बाइबिल की आज्ञा दस आज्ञाओं का हिस्सा है। और विवाह मसीह और चर्च के लिए एक रूपक है। आप मसीह और चर्च के बीच इस गहरे आध्यात्मिक मिलन के बारे में सोचते हैं, और प्रेरित पौलुस विवाह को इसके रूपक के रूप में उपयोग करता है।

यह वैवाहिक मिलन और एक विवाह के महत्व को और पुष्ट करता है। बाइबिल के दृष्टिकोण से यौन शुद्धता का महत्व, बाइबिल के दृष्टिकोण से यौन शुद्धता का महत्व, शास्त्रों में एक आवर्ती विषय है। हमें बताया गया है कि विश्वासी हैं, हम मसीह के सदस्य हैं और उसके साथ एक हैं, और इसलिए यह यौन शुद्धता पर एक वास्तविक प्रीमियम रखता है।

जैसा कि पॉल कहते हैं, मैं खुद को एक वेश्या के साथ क्यों जोड़ना चाहूँगा जब मैं मसीह का हिस्सा हूँ, और मैं एक मंदिर हूँ, मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है? 1 कुरिन्थियों 6 में नोट देखें। यहाँ एक और बिंदु है जो मुझे लगता है कि मानव कामुकता और प्रजनन के बारे में अधिक जोर दिया जाना चाहिए और यह कैसे त्रिएकता को दर्शाता है। तो, यह एक शास्त्रीय ईसाई पंथ में एक शिक्षा है कि पवित्र आत्मा पिता और पुत्र के मिलन से आगे बढ़ती है, और तीनों एक ही प्रकृति को साझा करते हैं।

वास्तव में, पुत्र पिता से अनंत काल तक आगे बढ़ता है, और फिर पुत्र, या पिता और पुत्र के मिलन से, पवित्र आत्मा अनंत काल तक आगे बढ़ता है। त्रिदेव और पवित्र आत्मा के ये तीन व्यक्ति इस कारण से कम दिव्य नहीं हैं, बल्कि पिता और पुत्र के समान ही प्रकृति साझा करते हैं। खैर, यहाँ समानता पर ध्यान दें, जैसे कि एक मानव पिता और माता के मिलन से, एक बच्चा आगे बढ़ता है, जो कम मानवीय नहीं है, मानवीय प्रकृति साझा करता है, और उसका वही मानवीय सार है।

माता के मिलन से बच्चे के रूप में मानव प्रजनन के बीच एक समानता है। क्या यह सिर्फ एक संयोग है? या यह मानव प्रकृति और मानव परिवार किस तरह पवित्र त्रिमूर्ति को प्रतिबिम्बित करता है, के बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण आध्यात्मिक तथ्य है? मुझे लगता है कि यह वास्तव में

मानव कामुकता और प्रजनन की पवित्रता को रेखांकित करता है।

तो, चलिए समलैंगिकता के विषय पर चलते हैं। स्कॉट रे ने नोट किया कि समलैंगिक शब्द, जो खुद ही फैशन या लोकप्रिय उपयोग से बाहर हो रहा है, मुझे लगता है कि अब पसंदीदा शब्दावली समान-लिंग आकर्षित या समान-लिंग गतिविधि है, लेकिन समलैंगिक शब्द अपने आप में अस्पष्ट है। हमारा मतलब यह हो सकता है कि कोई व्यक्ति जो यौन रूप से उलटा है, यह स्कॉट रे का शब्द है, जो उन लोगों को संदर्भित करता है जो विशेष रूप से अपने लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं, किसी ऐसे व्यक्ति के विपरीत जो परिस्थितिजन्य रूप से समलैंगिक है, किसी ऐसे व्यक्ति को जिसने समलैंगिक अनुभव, समान-लिंग यौन अनुभव किए हैं, लेकिन वे प्रमुख आकर्षण के अर्थ में उस तरह से उन्मुख नहीं हैं। इसलिए, समलैंगिक शब्द अपने आप में थोड़ा अस्पष्ट है, लेकिन यहां हमें एक महत्वपूर्ण अंतर ध्यान में रखना होगा, वह है समलैंगिक आकर्षण और समलैंगिक व्यवहार के बीच का अंतर।

इसलिए, कोई व्यक्ति समलैंगिक गतिविधि या आचरण में शामिल हो सकता है और वास्तव में उस तरह से आकर्षित नहीं हो सकता है, या कोई व्यक्ति समान लिंग के तरीके से आकर्षित हो सकता है और कभी भी समलैंगिक व्यवहार में शामिल नहीं हो सकता है। समलैंगिकता के कारणों के लिए, यह सवाल अक्सर पूछा जाता है: क्या यह समलैंगिक प्रवृत्ति आनुवंशिक है या अर्जित? इस बारे में बहुत बहस है, और इस बिंदु पर सबूत अनिर्णायक प्रतीत होते हैं। मस्तिष्क के बारे में बहुत सारे न्यूरोएनाटॉमिक अध्ययन किए गए हैं, लेकिन सबसे दिलचस्प और, मुझे लगता है, प्रासंगिक अध्ययन आनुवंशिक हैं, विशेष रूप से जुड़वां अध्ययन, जो समान जुड़वां के बीच समरूपता दरों की जांच करते हैं।

समरूपता का संबंध समान जुड़वा बच्चों के झुकाव के संदर्भ में समानता या सहमति से है। यदि समलैंगिकता का कारण पूरी तरह से आनुवंशिक है, तो समान जुड़वा बच्चों के बीच, चाहे विषमलैंगिक हो या समलैंगिक, 100% समरूपता दर होनी चाहिए। और यह उन जुड़वा बच्चों के लिए भी सही होना चाहिए जो एक साथ पले-बढ़े हों या गोद लिए गए हों।

कुछ शुरुआती अध्ययन फ्रांज कलमैन नामक एक शोधकर्ता द्वारा किए गए थे, जिन्होंने 100% सहमति दर पाई थी, लेकिन उनके अध्ययनों की चौतरफा आलोचना की गई है। एक, क्योंकि सभी विषय संस्थागत या मानसिक रूप से बीमार थे, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अध्ययन में कोई गोद लिया हुआ जुड़वां शामिल नहीं था। फिर भी, इन समस्याओं के बावजूद, दुर्भाग्य से, इस अध्ययन को अक्सर निर्णायक के रूप में उद्धृत किया जाता है, जबकि बाद के कई अध्ययनों में केवल 10 से 50% सहमति दर ही पाई गई है।

यहाँ कुछ ऐसे अध्ययन दिए गए हैं। बेली और पिलार्ड अध्ययनों में एक साथ पाले गए समानों के लिए 50% समरूपता दर पाई गई। यह अपने आप में उल्लेखनीय है, लेकिन फिर गैर-समानों के लिए केवल 22% समरूपता दर है।

वे निष्कर्ष निकालते हैं कि आनुवंशिकी एक योगदान देने वाला कारण है। हालांकि, उनके अध्ययनों में संभावित समस्याओं में यह तथ्य शामिल है कि समरूप जुड़वां शोध विज्ञापनों पर

अधिक बार प्रतिक्रिया देते हैं, और दोनों जुड़वाँ बच्चों के यौन अभिविन्यास की रिपोर्ट सीधे तौर पर नहीं, बल्कि किसी तीसरे पक्ष द्वारा की गई थी। किंग और मैकडॉनल्ड द्वारा किए गए हाल के अध्ययनों में बेली और पिलार्ड की तुलना में कम समरूपता दर पाई गई है, और उन्होंने अनजाने में पाया कि उनके अनुसार समान जुड़वाँ बच्चों के बीच यौन संबंध होने की अपेक्षाकृत उच्च संभावना है।

समान व्यक्तियों के बीच सामंजस्य दर के एक महत्वपूर्ण प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हो सकता है, जो कुछ पूर्व शोधकर्ताओं द्वारा अनाचार की भूमिका के बारे में दिए गए सिद्धांत की पुष्टि करता है। इसलिए यहाँ बहुत ही अस्थायी निष्कर्ष हैं। यह, आप जानते हैं, एक चल रही बहस है, लेकिन जब समलैंगिक स्वभाव की बात आती है तो आनुवंशिकी एकमात्र कारक नहीं हो सकती क्योंकि सामंजस्य दर 100% से कम है।

वैसे भी, इस विशेषता के खिलाफ चुनिंदा दबावों को देखते हुए, इसके बारे में सिर्फ सूक्ष्म-विकासवादी दृष्टिकोण से सोचें: इसके खिलाफ चुनिंदा दबाव हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी इसे नवीनीकृत करने के लिए कुछ गैर-वंशानुगत कारकों का होना ज़रूरी है। यहीं पर पर्यावरणीय कारक आते हैं।

हम अस्थायी रूप से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आनुवंशिक कारक संभवतः कुछ भूमिका निभाते हैं, शायद 30 से 50%, साथ ही पर्यावरणीय और व्यवहार संबंधी कारक, जैसे कि अपने समान लिंग वाले माता-पिता के साथ लिंग पहचान के लिए विकास संबंधी चुनौतियाँ, जिन्हें अक्सर महत्वपूर्ण माना जाता है। ठीक है, तो समलैंगिकता के कारणों के नैतिक निहितार्थ क्या हैं? यहाँ मैं इसका उत्तर कैसे दूँगा। भले ही समलैंगिक अभिविन्यास के लिए कुछ जैविक आधार हो, लेकिन जब तक कोई कठोर निर्धारक न हो, तब तक कोई नैतिक निहितार्थ नहीं हैं।

और कठोर निर्धारक से मेरा मतलब है कि यह वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार सभी मानवीय विकल्प कारण होते हैं और इसलिए हम स्वतंत्र नहीं हैं। अगर हम मानते हैं कि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है, तो भले ही किसी विशेष स्वभाव के लिए किसी प्रकार का जैविक या यहां तक कि जैविक और पर्यावरणीय निर्धारक हो, अगर हमारे पास किसी भी महत्वपूर्ण अर्थ में स्वतंत्र इच्छा है, तो हमें अभी भी यह चुनने की स्वतंत्रता है कि हम कैसे कार्य करेंगे। जैसे कि कोई व्यक्ति, मान लीजिए, आनुवंशिक रूप से शराबी स्वभाव का है, तो वे अभी भी चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।

मेरा एक भाई है जो शराबी है। वह पिछले आठ सालों से शराब नहीं पी रहा है और वह शराब से दूर रहने का स्वतंत्र रूप से चुनाव करता है। वह इन सभी सालों में लगातार ऐसा करता रहा है, भले ही उसमें शराब पीने की प्रवृत्ति हो।

हमारे अस्तित्व के हर पहलू पर कारणात्मक प्रभाव होते हैं, लेकिन फिर भी हमारे विकल्प स्वतंत्र होते हैं। और इसलिए अगर किसी व्यक्ति में समलैंगिक आकर्षण या स्वभाव है, तो वे अभी भी यह चुनने के लिए स्वतंत्र हैं कि उस स्वभाव के अनुसार कार्य करना है या नहीं। फिर भी, हमें उन लोगों के प्रति करुणा और संवेदनशीलता का प्रयोग करने की आवश्यकता है जो इस क्षेत्र में

संघर्ष करते हैं क्योंकि यह अभी भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है, उस तरह से आकर्षित होने वाला आकर्षण या स्वभाव।

अंत में, समलैंगिकता के बारे में कुछ बाइबिल ग्रंथों पर विचार करें। बाइबिल समलैंगिकता या समलैंगिक गतिविधि के बारे में कहां बात करती है, और वास्तव में कैसे? उत्पत्ति 19 में, एक प्रसिद्ध मार्ग है जहाँ भगवान ने सदोम को नष्ट कर दिया, जाहिर तौर पर मुख्य रूप से यौन अनैतिकता के कारण, जिसमें समलैंगिक अभ्यास भी शामिल है, जिसे जूड के लेखक ने स्पष्ट किया है, भले ही यह केवल उत्पत्ति 19 की कथा में निहित है। जूड के लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि इसीलिए भगवान ने उस शहर को नष्ट कर दिया।

लैव्यव्यवस्था 18 और 20 में, दोनों ही अंश पुरुषों के बीच यौन संबंधों को घृणित बताते हैं और बाद के मामले में, मृत्यु दंडनीय बताते हैं। 1 तीमुथियुस 1:8-10 और 1 कुरिन्थियों 6:9-11 में, ये अंश समलैंगिक अपराधियों को क्रमशः कानून तोड़ने वाले और परमेश्वर के राज्य के वारिस न होने वाले के रूप में संदर्भित करते हैं। रोमियों 1 में, हमें बाइबल में समलैंगिकता के बारे में सबसे विस्तृत चर्चा मिलती है।

वहाँ, पौलुस ने आयत 24-27 में पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अप्राकृतिक संबंधों और अभद्र यौन कृत्यों की निंदा की। अब, जो लोग इन अंशों के प्रति अधिक उदार दृष्टिकोण रखते हैं, उन्होंने इस अंश की कई वैकल्पिक व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं, और यहाँ उनमें से कुछ वैकल्पिक व्याख्याएँ दी गई हैं। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यह अंश केवल समलैंगिक पुरुष वेश्यावृत्ति को मना करता है।

पॉल का मतलब सभी समलैंगिक गतिविधियों की निंदा करना नहीं है। एक अन्य व्याख्या इस बात पर जोर देती है कि पॉल सच्चे विषमलैंगिकों की निंदा कर रहे हैं जो समलैंगिक कृत्यों में संलग्न हैं। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति स्वाभाविक रूप से विषमलैंगिक तरीके से उन्मुख है, लेकिन इसके बावजूद उन्हें समलैंगिक अनुभव होते हैं, तो यह उनके लिए अप्राकृतिक होगा, जबकि यह किसी ऐसे व्यक्ति के लिए अप्राकृतिक नहीं होगा जो समलैंगिक तरीके से उन्मुख है।

तो, इस व्याख्या के अनुसार, पॉल सभी समलैंगिक गतिविधियों की निंदा नहीं कर रहा है। तीसरा, कुछ लोग तर्क देते हैं कि पॉल समलैंगिकता के विकृत भावों की निंदा कर रहा है, न कि प्रतिबद्ध समलैंगिक संबंधों की। तो, वह जिस चीज की निंदा कर रहा है, वह समलैंगिक संकीर्णता है, जो अप्राकृतिक है, और इस व्याख्या के अनुसार, वह एकांगी समलैंगिक संबंध को स्वीकार या स्वीकार करेगा।

हालाँकि, इस अंश की मानक ऐतिहासिक पारंपरिक व्याख्या यह है कि पॉल सभी समलैंगिक व्यवहार की निंदा करने का इरादा रखता है, चाहे इसमें पुरुष वेश्यावृत्ति शामिल हो या न हो, चाहे यह किसी के प्राकृतिक स्वभाव या इच्छाओं के अनुरूप हो या न हो, और चाहे यह प्रतिबद्ध एकल संबंध के संदर्भ में हो या न हो। मुझे लगता है कि स्कॉट रे इस बारे में सही हैं। यह एकमात्र व्याख्या है जो अंश में ऐसी चीजें नहीं पढ़ती जो वहाँ नहीं हैं। और जब आप इस मुद्दे पर विद्वत्ता को देखते हैं, और आप देखते हैं कि कैसे कुछ विद्वानों ने इन वैकल्पिक व्याख्याओं का बचाव

किया है, तो यह हमेशा सबसे अच्छा तनावपूर्ण होता है, और इस अंश में ऐसी चीजें पढ़ी जाती हैं जो वहाँ नहीं हैं।

अंत में, यहाँ कुछ अनुशंसित पठन सामग्री दी गई है। ये इस मुद्दे पर पाँच सर्वश्रेष्ठ संसाधन हैं जो मैंने देखे हैं, विशेष रूप से समलैंगिकता और विवाह, और सामान्य रूप से यौन नैतिकता। लेकिन एंडरसन, जॉर्ज और गेर्गेस ने एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है विवाह क्या है? पुरुष और महिला, एक बचाव, यह इस मुद्दे का एक उत्कृष्ट उपचार है।

केविन डी यंग की किताब, *बाइबल वास्तव में समलैंगिकता के बारे में क्या सिखाती है?* रॉबर्ट गगनन की किताब, यह शायद अंग्रेजी भाषा में इस मुद्दे का सबसे अच्छा उपचार है, *बाइबल और समलैंगिक अभ्यास, पाठ और हेर्मेनेयुटिक्स*। रॉबर्ट रेली की किताब *मेकिंग गो ओके। होमोसेक्सुअल व्यवहार को तर्कसंगत बनाना कैसे सब कुछ बदल रहा है*, इस मुद्दे के बारे में एक आकर्षक सांस्कृतिक अध्ययन है।

मानव कामुकता पर मैंने अब तक जो सबसे अच्छी चीज़ पढ़ी है, वह है पोप जॉन पॉल द्वितीय की *थियोलॉजी ऑफ़ द बॉडी*। यह लगभग 700 पृष्ठों की है। मैंने वास्तव में इसके केवल कुछ अंश ही पढ़े हैं, लेकिन मैंने क्रिस्टोफर वेस्ट की पुस्तक, *थियोलॉजी ऑफ़ द बॉडी फ़ॉर बिगिनर्स* पढ़ी है।

यह इस विषय पर इस विशाल महान कृति का एक अच्छा परिचय है। यह बस जबरदस्त है। मुझे लगता है कि मैं सुरक्षित रूप से कह सकता हूँ कि यह मानव इतिहास में मानव कामुकता पर लिखी गई सबसे अच्छी चीज़ है।

यह एक साहसिक दावा है, लेकिन बहुत से लोग हैं जो इस पर मुझसे सहमत हैं, और उस विशेष खंड पर बहुत कुछ लिखा गया है। यदि आप ऑनलाइन जाते हैं, तो आप पोप जॉन पॉल द्वितीय के शरीर के धर्मशास्त्र पर कुछ बहुत ही उपयोगी नोट्स पा सकते हैं जो उनके बिंदुओं को केवल 20 या 30 पृष्ठों में संक्षिप्त करने में सहायक हैं, लेकिन यह गहन सामग्री है। वह वास्तव में इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे मानव, न केवल मानव स्वभाव, बल्कि मानव कामुकता वास्तव में अंततः त्रिदेवों में निहित है, या कम से कम त्रिदेवों में ही वह स्थान है जहाँ हमें यौन आचरण के बारे में अपनी सोच को निर्देशित करने के संदर्भ में देखने की आवश्यकता है।

इसलिए, मैं इन अन्य संसाधनों के साथ-साथ इसकी भी अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 13 है, यौन नैतिकता।